

KATHÁS. 62, 224. नगरं प्रविशन् यातः समं तेनैरुध्यत RÍGA-TAR. 3, 451.  
KATHÁS. 18, 392. रुद्ध Gobh. 2, 3, 9. R. 1, 28, 23. 7, 36, 42. Vikr. 121. Spr.  
4818. KATHÁS. 42, 46. 43, 246 (रुद्धः zu lesen). व्यूहप्रवेशतः 48, 29. RÍGA-  
TAR. 3, 19. 51. 4, 248. 6, 44. जकृदपुः 49. Vet. in LA. (III) 17, 22, v. l. रणे  
रुद्धः HARIV. 9199 nach der Lesart der neueren Ausg. मेयुनरुद्धस्य पा-  
ण्डोः im Beischlaf gehemmt, dem der Beischlaf gewehrt war Būg. P. 9,  
22, 26. तिस्रान् गिरिनैरुत्सीत् BHATT. 13, 80. नदीं शुक्तिमतीं गिरिः ।  
श्रीरुत्सीत् MBH. 1, 2367. HARIV. 11207. R. 7, 32, 15. 18. Būg. P. 9, 13, 20.  
zurückstossen BHATT. 8, 80. अस्त्रे रुद्धे MBH. 3, 7205. R. 3, 33, 48. शक्यते  
नैव रोद्धुं च कथमप्यधुना मया (प्रवरुणम्) ich kann das Schiff nicht zu-  
rückhalten KATHÁS. 26, 14. यानपात्रमकस्मादभवदुद्धं व्यासक्तमिव केन-  
चित् 18, 294. 298. 303. धारयामास जीवितम् । रुद्धिं प्रविष्टया रुद्धं तत्प्र-  
त्यागमवाञ्छया 230. zurückhalten, festhalten, vor einem Falle bewah-  
ren: आशाबन्धः कुसुमसदृशं प्रायशो कृद्भनानां सद्यःपाति प्रणपि रुद्धं  
विप्रयोगे रूपाद्धिं Megh. 10. करेण रुद्धो ऽपि हि केशपाशः RAGH. 7, 6. क-  
रुद्धनीवि (वसन) Cíc. 9, 75. — 2) hemmen, unterdrücken, verhindern,  
wehren: प्राणाम् AV. 11, 3, 55. ओषधिरुद्धवोर्य RAGH. 2, 32. Būg. P. 3,  
8, 11. 4, 22, 39. रुद्धवपि धिया भुवः 9, 11, 16. रूपाद्ध्यागमम् VARĀH. BṚH.  
S. 53, 62. रुद्धगिरि Būg. P. 10, 82, 14. 60, 23. Spr. 2083. रोद्धुं कसितम्  
2084. रुद्धतटमिमुष्य (d. i. रुद्ध + तट°, nicht रुद्ध - तट + आ°) 2586.  
भवतामनुज्ञातं (subj.) रूपाद्धिं मम विक्रमम् R. 5, 58, 7. अरुद्धं च पराक्र-  
मम् BHATT. 15, 63. रुद्धालेकि नरपतिपथे Megh. 38. रुद्धा दृष्टिः DAČAK. 73,  
5. निद्रा नयनसलिलोत्पीडरुद्धावकाशाम् Megh. 88. रुद्धापाङ्गप्रसर 93.  
प्राणापानगती रुद्धा Būg. 4, 29. विपतिं वक्तुं न तत्राणां गतीरपि PRAB.  
84, 13. दिव्यानां च गती रोद्धुम् KATHÁS. 33, 188. रुरुधुस्तस्य प्रवेशम् 18,  
107. 46, 201. तित्तिभृद्गुणिगम् RÍGA-TAR. 2, 38. रुद्धप्रवाका वितस्ता 4,  
703. डुरतिपाको दत्तिपाभिश्च रुद्धः VARĀH. BṚH. S. 46, 17. रणरेणवा रु-  
रुधिरं रुधिरं सुरद्विषाम् der Staub wurde gebunden RAGH. 9, 21. किं  
रुद्धं ते मयाशनम् habe ich dir das Essen versagt? KATHÁS. 27, 35. भूमा-  
वरुद्धती व्याता रुद्धत्यपि सतीधुरम् (so ist zu schreiben) die oberste  
Stelle der tugendhaften Frauen (anderen Frauen) versagend d. i. selbst an  
der Spitze der tugendhaften Frauen stehend 80. मन्त्रा रुद्धाः gehemmt, nicht  
wirkend SARVADARJANAS. 171, 10. — 3) zurückhalten so v. a. bei sich be-  
halten: अरिं अमृद्विषमैरात् AV. 10, 4, 26. so v. a. sparen, kargen mit  
(acc.): त्वं जिगीष्य न धनां हरोद्यध R. V. 1, 102, 10. तस्मै कृणोमि न धनां  
रूपाद्धिं 10, 34, 12. यो देवकामो न धनां रूपाद्धिं 42, 9. — 4) einschliessen,  
einsperren in (loc.): विमाने तां हरोद्यध R. 7, 24, 2. रुरुधुस्तं मकीपालं पुरे  
MĀK. P. 122, 14. रावणात्पुरे रुद्धा R. 4, 58, 25. 6, 10, 11. M. 9, 12. Būg.  
P. 1, 8, 23. 4, 28, 60. 7, 1, 27. मनः — रुद्धिं रुद्ध्याच्छनैः 13, 33. गर्तरुद्ध  
श्वेत्वरः R. 4, 34, 2. आत्मरुद्धानि (ओषधिविज्ञानि) Būg. P. 4, 17, 24. mit  
doppeltem acc.: हरोद्यध गोकुलं गोपीः Vop. 3, 6. einen Weg versperren:  
रुद्धा रथमार्गम् R. 3, 56, 8. Megh. 100. रूपाद्धिं सवितुर्मार्गम् BHATT. 6, 35.  
einen Feind, einen Ort einschliessen, belagern, besetzen: एकं रुद्धा स्थि-  
ताः सतो रुद्धाः स्मो ऽन्येन शत्रुणा KATHÁS. 49, 70. अरूपाद्यवनः सकेतम्,  
अरूपाद्यवनो माध्यमिकान् PAT. in Ind. St. 5, 131. लङ्काया उत्तरं द्वारम् R.  
6, 16, 25. हरोद्यध च गुरुं तस्य KATHÁS. 17, 81. 43, 104. 88, 26. fg. 112, 163.  
यत्सेप्रति गृह्णमि मे बलवत्तरेण मकीरेण रुद्धम् besetzt PAÑĀT. 227, 21.  
अरुद्धतां पुरीम् MBH. 3, 638. 15237. R. GORR. 1, 68, 19. 21. 6, 16, 55 (med.).

VI. Theil.

VARĀH. BṚH. S. 7, 19. Būg. P. 3, 3, 10. 4, 28, 2. 8, 13, 23 (med.). BHATT.  
13, 10. पुरं चारुध्यतारिणा MĀK. P. 37, 18. BHATT. 14, 29. KATHÁS. 31,  
105. Būg. P. 9, 10, 17. verschliessen: नगरद्वारम् R. 4, 9, 66. RÍGA-TAR.  
3, 431. रुद्धा गुहाः किम् Spr. 4033. (वायुः) हरोद्यध सर्वभूतानि यथा वर्षाणि  
वासवः R. 7, 33, 50. 58. — 3) verhüllen, verdecken: अर्कं रुद्ध्यां शरैः R.  
3, 53, 10. 4, 27, 9. 37, 29. RAGH. 14, 82. KATHÁS. 108, 7. RÍGA-TAR. 3, 60.  
शरैरुत्तरितं रुद्ध्यतुः (sic) R. 6, 90, 17. MĀK. 76, 6. RÍGA-TAR. 2, 139.  
भूतं (ein Wesen) रुद्ध्यां रोदसो शरीरेण VARĀH. BṚH. S. 33, 2. यो (खं die  
neuerer Ausg.) भुवं चैव रुद्ध्ये (रुद्ध्यम् ed. Calc.) HARIV. 303. वस्त्रात्त-  
रुद्धवक्त्राः MĀK. 159, 18. घनतिमिररुद्धं च नयने Spr. 1613. शेक्षाद्व-  
वाप्यरुद्धशः VARĀH. BṚH. S. 3, 14. KATHÁS. 14, 24. Spr. 2277. Būg. P.  
1, 13, 30. 4, 30, 44. मेघरुद्ध MBu. 3, 7195. चरणार्थरुद्धवसुध so v. a. mit  
dem halben Fusse den Erdboden berührend Spr. 1246. रुद्ध = संवतः.  
आवृत AK. 3, 2, 40. H. 1476. — 6) verstopfen, erfüllen, anfüllen: अश्रुभिः  
काण्ठदेशम् KATHÁS. 17, 81. मुखं बाष्पे रूपाद्धिं मे R. 4, 60, 1. कस्तूरुद्धमुखाः  
52, 25. 53, 1. आश्रयधूमोद्वेगो गन्धो (आश्रयधूमो भवेद्वेगो ed. Calc.). आश्रयधू-  
मोद्वेगोद्वेगो ed. Bomb.) रूपाद्धिं तपोवनम् MBu. 13, 6482. वेष्मनि धू-  
मरुद्धानि 14, 1741. रुद्धवसुधान्नेच्छाविर्वास्य RÍGA-TAR. 1, 115. स्वालाह-  
र्दमिवोरगम् R. 4, 33, 41. प्राप्तरुद्धवदन (वाजिन्) VARĀH. BṚH. S. 93, 7. —  
7) peinigten, hart mitnehmen: मर्म मे निशितः शरः । रूपाद्धिं (= पीडयति  
Comm.) मृदु सोत्सेधं तीरमन्वुरयो यथा ॥ R. 2, 63, 43. — 8) रुद्ध = अ-  
वरुद्ध erhalten Būg. P. 2, 7, 21.

— caus. 1) zurückhalten, anhalten: कैरवान्द्रवतो क्षेप कर्णो रोधयते  
MBu. 8, 2903. — 2) Jmd durch Jmd einsperren lassen, mit dopp. acc.:  
रोधयामासुरिष्टं तां सुगोप्यमपि PAÑĀT. 1, 14, 105. belagern lassen durch  
(instr.): लङ्कां रोधयामास वानरैः RAGH. 12, 71. — 3) Macht ausüben auf,  
fesseln; mit acc.: न रोधयति मां योगो न साध्यं धर्म एव च Būg. P. 11,  
12, 1. — 4) quälen, peinigigen: मैथिलीं कुरुता तेन मां च रोधयता भृशम् R.  
4, 5, 22. in dieser Bed. auch रुद्धयति in der Verbindung: शेक्षा मां रु-  
द्धयत्ययम् MBu. 3, 999. 12, 191. 733; vgl. रुध् caus. 2).

— अनु 1) versperren: शिलाभिः u. s. w.: ये मार्गमनु रुद्धन्ति MBu. 13,  
1649. einschliessen, umzingeln: रुद्धानुचैर्मखो मदान् — अन्वरुध्यत Būg.  
P. 4, 5, 13. fesseln, in seine Gewalt bringen, beherrschen: यावन्मनो रज-  
सा पूरुषस्य सत्त्वेन वा तमसा वानुरुद्धम् 5, 11, 4. तपोवनमनु रुद्धन्ति ČĀK.  
18, 10, v. l. für तपोवनमुपरुद्धन्ति in Verwirrung bringen. — 2) pass.  
oder Klasse 4. sich einschliessen in, sich hängen an (acc.): सौषधीरु-  
द्धयसे RV. 8, 43, 9; vgl. P. 6, 1, 131, Sch. — 3) kleben an (acc.): अनु-  
रुद्ध्यादयं त्र्यहम् so v. a. während dreier Tage wird er der Sünde nicht los  
M. 3, 63. so v. a. Jmd auf dem Fusse folgen: अयमनु रुध्यमानस्तापसी-  
भ्यामबालसम्बो बालः ČĀK. Ch. 131, 2 (अनुवध्यमानः die andere Rec.).  
पुमांसमनु रुध्यता so v. a. unmittelbar nach P. 3, 2, 100, Sch. an Jmd  
oder Etwas hängen, Jmd zugethan sein, einer Sache sich hingeben, ob-  
liegen, sich anlegen sein lassen; med. und act.: एकं तमनु रुद्धाना ज्ञा-  
तयः पर्युपासत Būg. P. 10, 2, 4. नानुरुद्धन्ति श्रोतृचित्तानुवर्तनम् RÍGA-  
TAR. 3, 95. मानुषं लोकमासाद्य तज्ज्ञातिमनु रुद्धतः (कृत्स्नस्य) Būg. P. 10,  
7, 3. सर्गादि यो ऽस्यानुरुद्धा 4, 17, 33. gewöhnlich अनु रुद्ध्यसे (कामे Du-  
tup. 26, 65) und ० सि in dieser Bed.: यत्तमव्यापि — राममेवानु रुध्यसे MBu.  
3, 16194. नानुरुद्ध्ये विरुद्ध्ये वा न द्वेष्टि न च कामये 12, 9849. 13, 966. स-

23\*